शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय

प्राप्तिः 23.09.2024
स्वीकृतः 29.09.2024

डॉ. शोकेन्द्र कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, दिगंबर जैन कॉलेज,
बडौत, बागपत (उ०प्र०)
ईमेलः *sharmashokendra@gmail.com*

75

सारांश

इस शोध पत्र का उद्देश्य प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली में नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों की अद्वितीय भूमिका का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इन दो प्रमुख शिक्षा केंद्रों की स्थापना, संगठन, शैक्षणिक ढांचे, पाठ्यक्रम, और शिक्षण विधियों की समीक्षा करता है। साथ ही, यह इन संस्थानों के वैश्विक प्रभाव और प्राचीन भारतीय शिक्षा के व्यापक संदर्भ में उनके योगदान का मूल्यांकन करता है। नालंदा और तक्षशिला के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि प्राचीन भारतीय समाज ने शिक्षा को किस प्रकार देखा, उसका उद्देश्य क्या था, और यह कैसे समय के साथ एक वैश्विक शैक्षिक धारा का हिस्सा बना। इस अध्ययन में न केवल इनके ऐतिहासिक महत्व को उजागर किया जाएगा, बल्कि यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि इन संस्थानों से वर्तमान षिक्षा प्रणाली क्या सीख सकती है, विशेष रूप से नैतिक, व्यावहारिक, और आध्यात्मिक शिक्षा के संदर्भ में।

मुख्य बिन्दु

नालंदा, तक्षशिला, विश्वविद्यालय, गुरुकुल, प्राचीन शिक्षा प्रणाली, बौद्ध धर्म, तर्कशास्त्र।

प्रस्तावना

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व के प्राचीनतम और उन्नत शैक्षिक व्यवस्थाओं में से एक मानी जाती है। यह प्रणाली न केवल बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करती थी, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान पर भी विशेष बल देती थी। गुरुकुलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक, शिक्षा के विभिन्न केंद्रों ने समाज के सभी वर्गों के छात्रों को विद्या प्राप्ति का अवसर प्रदान किया। इस प्रणाली में शिक्षक और शिष्य के बीच संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण थे, जो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को और भी समृद्ध बनाते थे। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि चरित्र निर्माण,

जीवन के विभिन्न आयामों को समझना और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन भी था। नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय प्राचीन भारत के शिक्षा केंद्रों के शिखर पर स्थित थे। तक्षशिला, लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में स्थापित, चिकित्सा, राजनीति, और सैन्य विज्ञान जैसे व्यावहारिक विषयों के लिए प्रसिद्ध था, जबकि नालंदा, 5वीं शताब्दी ईस्वी में स्थापित, बौद्ध धर्म और दर्शन के अध्ययन का प्रमुख केंद्र था। ये विश्वविद्यालय न केवल भारतीय उपमहाद्वीप के छात्रों के लिए, बल्कि चीन, तिब्बत, कोरिया, और अन्य एशियाई देशों के विद्वानों के लिए भी शिक्षा के केंद्र थे, जिन्होंने यहां से ज्ञान अर्जित कर वैश्विक बौद्धिक विरासत को समृद्ध किया।

तक्षशिला विश्वविद्यालयरू प्राचीन भारत का शिक्षा केंद्र

स्थान और स्थापना

तक्षशिला, प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्रों में से एक, आधुनिक पाकिस्तान के रावलपिंडी जिले में स्थित था। इसकी स्थापना 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आस–पास मानी जाती है। भौगोलिक रूप से यह पश्चिम और पूर्व के सांस्कृतिक तथा बौद्धिक आदान–प्रदान का केंद्र था, जिससे इसे वैश्विक महत्व प्राप्त हुआ।

शैक्षणिक संगठन और पाठ्यक्रम

तक्षशिला में कोई केंद्रीय विश्वविद्यालय जैसी संरचना नहीं थी। यह शिक्षकों के आश्रमों का समूह था, जहां विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। चिकित्सा, राजनीति, सैन्य विज्ञान, वैदिक साहित्य, खगोलशास्त्र और व्याकरण जैसे विषयों का अध्ययन प्रमुख था। चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा का विशेष महत्व था।

प्रमुख शिक्षक और विद्वान

तक्षशिला के प्रतिष्ठित शिक्षकों में चाणक्य का नाम सर्वोपरि है, जिनकी रचना "अर्थशास्त्र" राजनीति और शासन के क्षेत्र में मील का पत्थर है। चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य को शिक्षित कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चिकित्सा क्षेत्र में जीवक और संस्कृत व्याकरण के विशेषज्ञ पाणिनी भी तक्षशिला से जुडे थे। पाणिनी की "अष्टाध्यायी" संस्कृत व्याकरण का आधार मानी जाती है।

छात्र जीवन और प्रवेश प्रक्रिया

तक्षशिला में प्रवेश की कोई औपचारिक प्रक्रिया नहीं थी। छात्र अपने गुरु के आश्रय में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरु–शिष्य परंपरा के अनुसार शिक्षा के साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता था। छात्रों का जीवन अनुशासनपूर्ण था, जहां व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान का संतुलन था।

तक्षशिला का पतन

5वीं शताब्दी ईस्वी में हूणों के आक्रमण के बाद तक्षशिला का पतन शुरू हुआ। मौर्य साम्राज्य और अन्य राजवंशों के पतन के साथ इसकी राजनीतिक और आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। बौद्ध धर्म के पतन और राज्य के समर्थन की कमी ने भी इसके पतन में योगदान दिया।

तक्षशिला विश्वविद्यालय ने प्राचीन भारतीय शिक्षा और बौद्धिक धरोहर को समृद्ध किया। यह केवल शिक्षा का केंद्र नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान–प्रदान का मंच भी था, जिसने प्राचीन भारत की वैश्विक पहचान को स्थापित किया।

नालंदा विश्वविद्यालयरू प्राचीन भारतीय शिक्षा का गौरव

स्थान और स्थापना

नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों में से एक था, जिसकी स्थापना गुप्त साम्राज्य के दौरान 5वीं शताब्दी ईस्वी में हुई थी। यह आधुनिक बिहार के नालंदा जिले में स्थित था। नालंदा का भूगोल इसे सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों का के लिए आदर्श स्थल बनाता था, क्योंकि यह पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) और वैशाली जैसे ऐतिहासिक नगरों के निकट स्थित था, जो बौद्ध धर्म के प्रमुख केंद्र थे। नालंदा की स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने की थी, जिनके शासनकाल में भारतीय कला, संस्कृति, और शैक्षणिक प्रगति का स्वर्णयुग था। इस विश्वविद्यालय ने बौद्ध धर्म के महायान शाखा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इसके संरक्षण में विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन किया जाता था। प्रारंभ में बौद्ध मठ के रूप में स्थापित नालंदा धीरे–धीरे एक विशाल विश्वविद्यालय परिसर के रूप में विकसित हुआ, जहां विद्वानों और छात्रों का सान्निध्य भारतीय और विदेशी ज्ञान को समृद्ध करने में सहायक रहा।

शैक्षणिक संगठन और पाठ्यक्रम

नालंदा के शिक्षा पाठ्यक्रम की व्यापकता और गहराई ने इसे अद्वितीय बनाया। बौद्ध धर्म और तर्कशास्त्र के साथ–साथ चिकित्सा और गणित के क्षेत्रों में भी यह विश्वविद्यालय अग्रणी था। चिकित्सा के अंतर्गत आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा की शिक्षा दी जाती थी, जबकि गणित में ज्यामिति और अंकगणित जैसे विषयों पर गहन अध्ययन कराया जाता था। यह विश्वविद्यालय अपनी व्यापक और गहन शिक्षा प्रणाली के लिए समकालीन दुनिया में विख्यात था। नालंदा की शिक्षण विधि में व्याख्यान, प्रश्नोत्तर, और तर्क–वितर्क को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता था, जिससे शिष्यों का बौद्धिक विकास तीव्र गति से होता था।

प्रमुख आचार्य और विद्वान

नालंदा विश्वविद्यालय में कई विख्यात विद्वान और आचार्य रहे, जिन्होंने इसे बौद्धिक रूप से समृद्ध किया। इनमें नागार्जुन और धर्मपाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नागार्जुन, महायान बौद्ध धर्म के प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं, जिन्होंने यहाँ दर्शन और तर्कशास्त्र की शिक्षा दी। उनके शून्यवाद के सिद्धांत ने बौद्ध चिंतन और तर्क को एक नई दिशा दी। धर्मपाल, नालंदा के एक अन्य महान आचार्य, ने बौद्ध धर्म के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नेतृत्व में नालंदा ने शैक्षणिक उत्कर्ष की ऊंचाइयों को छुआ। इनके अलावा, असंग और वसुबंधु जैसे विद्वानों ने भी नालंदा में शिक्षा दी, जिनकी विद्वता ने न केवल भारतीय बौद्ध साहित्य को समृद्ध किया बल्कि तिब्बती बौद्ध मत को भी गहराई प्रदान की।

भव्य भौतिक संरचना और समृद्ध पुस्तकालय

नालंदा विश्वविद्यालय की भौतिक संरचना इसकी बौद्धिक संपदा की तरह ही विशाल और

अद्वितीय थी। यहाँ का परिसर विशाल भवनों, स्तूपों, और ध्यान केंद्रों से सुसज्जित था, जो अध्ययन और ध्यान के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करते थे। विश्वविद्यालय का पुस्तकालय, जिसे "धर्मगंज" के नाम से जाना जाता था, उस समय विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय माना जाता था। यह पुस्तकालय तीन मुख्य भवनोंकृरत्नसागर, रत्नोदधि, और रत्नरंजककृमें विभाजित था। इनमें न केवल बौद्ध धर्म से संबंधित ग्रंथ संग्रहित थे, बल्कि विज्ञान, दर्शन, और साहित्य के अन्य विषयों पर भी असंख्य पांडुलिपियाँ उपलब्ध थीं। इन पांडुलिपियों का अध्ययन नालंदा के विद्वानों और छात्रों द्वारा किया जाता था, जिससे यहाँ की बौद्धिक परंपरा और भी समृद्ध होती गई। नालंदा विश्वविद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र था, बल्कि यह भारतीय और वैश्विक बौद्धिक इतिहास का एक अनमोल अध्याय भी है। इसकी शैक्षणिक प्रणाली, प्रमुख विद्वान, और संरचना ने इसे एक ऐसा गौरवशाली स्थान प्रदान किया, जिसे सदियों तक स्मरण किया जाएगा।

विद्यार्थी और विदेशी छात्रों का आगमन

नालंदा में छात्रों की संख्या दस हजार से अधिक थी, और यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए दुनिया भर से छात्र आते थे। चीन से आए ह्वेनसांग और इत्सिंग जैसे यात्रियों ने नालंदा की शिक्षा प्रणाली और छात्र जीवन की विस्तृत जानकारी दी है। उनके विवरणों के अनुसार, नालंदा में प्रवेश अत्यधिक कठिन था और केवल श्रेष्ठतम विद्वानों को ही यहाँ अध्ययन का अवसर प्राप्त होता था। विदेशी छात्र चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान, और दक्षिण–पूर्व एशिया से नालंदा में अध्ययन करने आते थे। यह विश्वविद्यालय न केवल बौद्ध धर्म के अध्ययन का केंद्र था, बल्कि यहाँ का वैश्विक दृष्टिकोण और विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम इसे विश्व में अद्वितीय बनाते थे। नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय शिक्षा का अद्वितीय केंद्र था, जिसकी शैक्षणिक, बौद्धिक, और सांस्कृतिक धरोहर आज भी समृद्ध और प्रेरणादायक है। नालंदा न केवल भारतीय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ था, बल्कि विश्व शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका योगदान अतुलनीय है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रमुख सिद्धांत

गुरुकुल और विश्वविद्यालयों का अंतर

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली दो प्रमुख संस्थाओं पर आधारित थीरू गुरुकुल और विश्वविद्यालय। गुरुकुल प्रणाली में शिष्य अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह प्रणाली अनौपचारिक थी और नैतिक, धार्मिक तथा वैदिक ज्ञान पर केंद्रित थी। दूसरी ओर, विश्वविद्यालयों जैसे तक्षशिला और नालंदा में संरचित और औपचारिक शिक्षा दी जाती थी। यहां विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करने के अवसर थे और यह प्रणाली बड़े स्तर पर विद्वानों और शोध ार्थियों को आकर्षित करती थी।

व्यावहारिक और सैद्धांतिक शिक्षा

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक शिक्षा का भी महत्व था। गुरुकुलों में धार्मिक और वैदिक अध्ययन के साथ–साथ कृषि, शिल्पकला और धनुर्विद्या जैसी व्यावहारिक विधाओं का भी अध्ययन कराया जाता था। विश्वविद्यालयों में गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और राजनीति जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी, जिससे समाज में सकारात्मक योगदान सुनिश्चित हो सके।

छात्र–गुरु संबंध

गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य का संबंध व्यक्तिगत, नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन पर आधारित था। शिष्य अपने गुरु से ज्ञान के साथ जीवन मूल्यों का भी संचार प्राप्त करते थे। विश्वविद्यालयों में भी यह संबंध अहम था, लेकिन अधिक औपचारिक रूप में संचालित होता था।

शिक्षा का उद्देश्य

प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति के साथ–साथ समाज सेवा को भी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया था। यह प्रणाली छात्रों को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाकर उनका समग्र विकास सुनिश्चित करती थी। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का समन्वित दृष्टिकोण विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, और सामाजिक विकास पर केंद्रित था, जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक योगदान दोनों का समान रूप से महत्व था।

नालंदा और तक्षशिला का वैश्विक प्रभाव

अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों का आगमन

नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का वैश्विक शैक्षिक प्रभाव उनके दरवाजे पर आने वाले अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों की संख्या और उनकी विद्वता से स्पष्ट होता है। विशेषकर नालंदा में चीन, तिब्बत, कोरिया, और जापान से बड़ी संख्या में विद्वान अध्ययन करने के लिए आते थे। चीनी बौद्ध विद्वान ह्वेनसांग और इत्सिंग नालंदा के सबसे प्रसिद्ध विदेशी छात्रों में से थे, जिन्होंने यहां दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता और विश्वविद्यालय की संरचना की प्रशंसा की। तक्षशिला में भी बौद्ध, वैदिक और सांस्कृतिक शिक्षा के लिए विदेशी विद्वानों का आगमन नियमित था, जहां तिब्बत और फारस से आए छात्र भी अध्ययन करते थे। इन विद्वानों ने लौटकर नालंदा और तक्षशिला में प्राप्त ज्ञान को अपने–अपने देशों में फैलाया, जिससे बौद्ध धर्म और भारतीय विद्या का वैश्विक प्रसार हुआ।

वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में ख्याति

नालंदा और तक्षशिला प्राचीन काल के महान वैश्विक शिक्षा केंद्र थे। उनकी प्रतिष्ठा का प्रमाण यह है कि विदेशी विद्वान इन संस्थानों में अध्ययन करने के लिए लंबी यात्राएं तय करते थे। तक्षशिला में धर्म, राजनीति, चिकित्सा और शास्त्रार्थ की पढाई होती थी, जबकि नालंदा महायान बौद्ध धर्म, तर्कशास्त्र, भाषा विज्ञान, चिकित्सा, और गणित में विषेशज्ञता प्राप्त कराता था। इन दोनों विश्वविद्यालयों की वैश्विक ख्याति का कारण केवल उनके बौद्धिक पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं था, बल्कि यहां के शिक्षकों की विद्वत्ता और अनुसंधान के प्रति गहन दृष्टिकोण भी था, जो उन्हें अन्य शैक्षिक संस्थानों से विशिष्ट बनाता था। यह ख्याति न केवल एशिया, बल्कि पश्चिमी और मध्य एशियाई देशों तक फैली हुई थी।

बौद्ध धर्म के प्रसार में भूमिका

नालंदा और तक्षशिला का बौद्ध धर्म के प्रसार में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान था। विषेश रूप से नालंदा बौद्ध धर्म के महायान और हीनयान शाखाओं के शिक्षण का प्रमुख केंद्र था। यहां अध्ययन करने वाले छात्र और विद्वान अपने–अपने देशों में बौद्ध धर्म के प्रचारक बने। तक्षशिला में भी बौद्ध

शिक्षाओं का व्यापक अध्ययन हुआ, जिससे बौद्ध धर्म को एशिया के अन्य हिस्सों में स्थापित करने में सहायता मिली। नालंदा के विद्वान, जैसे नागार्जुन और धर्मपाल, तिब्बत, चीन और जापान में बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए प्रेरणा स्रोत बने। इस प्रकार, इन विश्वविद्यालयों ने न केवल बौद्ध धर्म के प्रसार में भूमिका निभाई, बल्कि शिक्षा के वैश्विक आदान–प्रदान के माध्यम से विश्व बौद्धिकता के विकास में भी अभूतपूर्व योगदान दिया।

नालंदा और तक्षशिला की शिक्षा प्रणाली की तुलना

शैक्षणिक विषयों में अंतर

तक्षशिला और नालंदा दोनों प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रतिष्ठित केंद्र थे, लेकिन इनके स्वरूप और दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ थीं। तक्षशिला अपने बहु–विषयक और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ भारतीय उपमहाद्वीप सहित तिब्बत, फारस, और अन्य पडोसी देशों से विद्यार्थी विभिन्न विषयों, जैसे धर्म, युद्ध विद्या, और वैदिक साहित्य का अध्ययन करने आते थे। दूसरी ओर, नालंदा बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था, जहाँ चीन, कोरिया, जापान, और तिब्बत के बौद्ध विद्वान अध्ययन करते थे। यहाँ शिक्षण विधियाँ गहन और सुव्यवस्थित थीं, और नागार्जुन जैसे विद्वानों ने इसे बौद्ध धर्म के अध्ययन का वैश्विक केंद्र बनाया। दोनों संस्थानों ने अपने–अपने क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान दिए, तक्षशिला बहु–विषयक था जबकि नालंदा बौद्ध धर्म के अध्ययन में विशेषीकृत था।

प्रशासनिक संरचना

प्रशासनिक दृष्टिकोण से तक्षशिला और नालंदा का ढांचा भी भिन्न था। तक्षशिला, जो एक खुला शैक्षणिक स्थल था, किसी केंद्रीय प्रशासनिक प्रणाली से बंधा नहीं थाय यहाँ शिक्षक अपने आश्रमों में स्वतंत्र रूप से विद्यार्थियों को शिक्षण प्रदान करते थे। प्रत्येक शिक्षक अपने विषय के अनुसार विद्यार्थियों को चुनने और उन्हें शिक्षित करने के लिए स्वतंत्र था। इसके विपरीत, नालंदा में एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा था, जिसमें एक कुलपति के नेतृत्व में संचालन होता था। यहाँ शिक्षक विभिन्न संकायों में विभाजित थे, जो विषयवस्तु के अनुसार संगठित थे। नालंदा की संरचना और व्यवस्था उसे तक्षशिला की तुलना में अधिक अनुशासित और संगठित बनाती थी, जो उसे एक समृद्ध शैक्षणिक संस्थान के रूप में स्थापित करती थी।

निष्कर्ष–

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली ने नैतिक, बौद्धिक, और व्यावहारिक शिक्षा का एक अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत किया, जो न केवल विद्या अर्जन, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को भी प्रोत्साहित करती थी। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के आदान–प्रदान को बढावा दिया और बौद्ध धर्म, राजनीति, चिकित्सा, तथा अन्य विषयों में गहन अध्ययन के केंद्र बने। इन संस्थानों ने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप के विद्वानों, बल्कि विदेशों से भी छात्रों को आकर्षित किया। हालांकि आक्रमणों और बौद्ध धर्म के पतन के साथ ये विश्वविद्यालय समाप्त हो गए, लेकिन उनकी शैक्षिक धरोहर आज भी प्रेरणा का स्रोत है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र शैक्षिक योग्यता नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में समग्र विकास करना था। आज भी यह प्रणाली वैश्विक शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आदर्श मानी जाती है।

संदर्भ

1. सुरेश चंद्र बोस, हिस्ट्री ऑफढ एजुकेशन इन असिएंट इंडिया (3000 ईसा पूर्व से 1192 ई), मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, 2001
2. आनंद सिंह, नालंदारू ए ग्लोरियस पास्ट, रत्न सागर
3. सुकुमार दत्त, बुद्धिस्म इन ईस्ट एशिया, इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस, 1966
4. अनंत सदाशिव अलतेकर, एजुकेशन इन असिएंट इंडिया, इंडिया बुक शो
6. आर एन शर्मा और आरके शर्मा, हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
7. एचडी संकलिया, दी यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा, ओरिएंटल पब्लिशर्स
8. जॉन मार्शल, ए गाइड टू तक्षशिला, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस